बांगड़ कॉलेज में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित
कोविड-19 महामारी से विद्यार्थियों को भारी नुकसान

डीडवाना। स्थानीय राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में इन्टरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल (आई.क्यू.ए.सी.) के तत्वावधान में ऑनलाईन टिचिंग व ई-कन्टेंट विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। कोविड-19 महामारी से बचाव के लिए जारी गाईडलाइन की पालना करते हुए आयोज्य कार्यशाला में सह आचार्य डॉ. अतुल गर्ग ने अपने पी पीटी प्रजेन्टेशन के माध्यम से बताया कि कोविड-19 की महामारी से शिक्षण कार्य की कक्षा-कक्ष पद्धति जिसमें शिक्षक व विद्यार्थी आमने-सामने रहते हुए अध्ययन-अध्यापन करते थे, बाधित हुई है व इससे विद्यार्थियों को भारी नुकसान हुआ है। डॉ. गर्ग ने बताया कि ऑनलाईन टिचिंग व ई कन्टेंट के माध्यम से शिक्षक वर्चुअल क्लास रूम में विद्यार्थी से इन्टरनेंट का उपयोग करते हुए जुड़ रहा है तथा यूट्यूब पर विषयगत टॉपिक्स पर विडियों शेयर कर उन्हें घर बैठे अध्ययन जारी रखने में मददगार है। कोविड-19 की आपदा को स्कूली शिक्षक व उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षक ने अवसर में बदलते हुए इन्टरनेंट का उपयोग कर ऑनलाईन टिचिंग से विद्यार्थियों को लाभान्वित कर रहें है। डॉ. गर्ग ने इस सन्दर्भ में नए अवसर, चुनौतियों, सुझाव पर चर्चा की। कार्यशाला के संयोजक डॉ. अरूण व्यास ने बताया कि महाविद्यालय के शिक्षक विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों में ई-कन्टेंट तैयार कर रहे हैं तथा बांगड़ कॉलेज के यू-ट्यूब चैनल पर अभी तक कुल 1169 वीडियोज अपलोड कर चुके है जिसमें पाठ्यक्रम अनुसार अपडेटेड जानकारियां विद्यार्थियों को दी जा रही हैं। डॉ. व्यास ने बताया कि आई.क्यू.ए.सी. ने महाविद्यालय मे शैक्षणिक गुणवत्ता के उन्नयन हेतु क्वालिटी इनिशिएटिव के तहत कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें सभी संकाय सदस्यों की सहभागिता रही। वाणिज्य संकाय की श्रीमती प्रेम परिहार, सह आचार्य ई.ए.एफ.एम. ने ऑनलाईन टिचिंग व ई कन्टेंट की बारिकियों पर चर्चा करते हुए शिक्षकों के वीडियों व्याख्यान ने गुणात्मक सुधार पर प्रशंसा जाहीर ही। कला संकाय के चैनाराम महला ने बताया कि ई-प्लेटफार्म पर विद्यार्थियों से जुड़ाव रखने के लिए वीडियोज तैयार करने के लिए महाविद्यालय में रिकार्डिंग सुविधाओं युक्त स्टूडियों की आवश्यकता हैं। डॉ. सुरेश कुमार वर्मा ने नई शिक्षा नीति व ई क्लास की चुनौतियों पर चर्चा की। डॉ. इरशाद अली खान सह आचार्य-राजनीति विज्ञान ने बताया कि गांव व गरीब तक इन्टरनेट व स्मार्ट फॉन की पहुंच नहीं होने से विद्यार्थियों को होने वाले नुकसान पर ध्यान दिया जाना चाहिए तथा कोविड-19 की महामारी के दौर में इन्टरनेट के डाटा पैकेज में विद्यार्थियों शिक्षकों के लिए सस्ती दरों पर नई स्कीम वर्तमान समय की मांग है। कार्यशाला में वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. जहाँगीर रहमान कुरैशी ने शिक्षकों द्वारा कॉलेज के यू-ट्यूब चैनल पर गुणवता युक्त शैक्षणिक व्याख्यानों के अपलोड करने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए विद्यार्थियों से आहवान किया कि वे इन विडियोंज को देखे व घर बैठे अध्ययन को सुचारू रखें। उन्होने शिक्षकों से आह्वान किया की ई-प्लेटफॉम यथा यू-ट्यूब चैनल, वाट्सअप तथा फेसबुक पेज पर विद्यार्थियों के हितार्थ शैक्षिणिक ई-कन्टेंट साझा कर विद्यार्थियों को महामारी के इस दौर में ऑनलाईन टिचिंग के मार्फत लाभान्वित करते रहे। प्राचार्य सी.एस. डोटासरा ने आई.क्यू.ए.सी. के बैनर तले समसामयिक विषय पर कार्यशाला में संकाय सदस्यों के विचार विमर्श पर खुशी जाहिर की। कार्यशाला की तकनिकी संचालन राजेन्द्र आसेरी ने किया।

डीडवाना। बांगड़ कॉलेज मे कार्यशाला के दौरान उपस्थित प्राचार्य व अन्य।

Scanned with CamScanner

कोविड -19 महामारी में शिक्षा का बदला स्वरूप -डॉ.अतुल गर्ग

ऑनलाईन टीचिंग व ई-कन्टेंट पर कार्यशाला

डीडवाना @ पत्रिका. राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में सोमवार को महाविद्यालय के इन्टरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल (आई.क्यू.ए.सी.) के तत्वावधान में 'ऑनलाइन टीचिंग व ई-कन्टेंट' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए सहआचार्य गणित डॉ.अतुल गर्ग ने कहा कि कोविड-19 की महामारी से शिक्षण कार्य की कक्षा-कक्ष पद्धति, जिसमें शिक्षक व विद्यार्थी आमने-सामने रहते हुए अध्ययन-अध्यापन करते थे, बाधित हुई है। डॉ.गर्ग ने बताया कि ऑनलाइन टीचिंग व ई कन्टेंट के माध्यम से शिक्षक वर्चुअल क्लासरूम में विद्यार्थी से इन्टरनेंट का उपयोग करते हुए जुड़ रहा है। यू-ट्यूब पर विषयगत टॉपिक्स पर वीडियो शेयर कर उन्हें घर बैठे अध्ययन जारी रखने में मदद कर रहे है। कार्यशाला के संयोजक डॉ.अरूण व्यास ने बताया कि महाविद्यालय के शिक्षक विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों में ई-कन्टेंट तैयार कर रहे हैं तथा बांगड़ कॉलेज के यू-ट्यूब चैनल पर अभी तक कुल 1169 वीडियोज अपलोड कर चुके है। जिसमें पाठ्यक्रम अनुसार अपडेटेड जानकारियां विद्यार्थियों को दी जा रही है। सहायक आचार्य चैनाराम महला ने बताया कि ई-प्लेटफार्म पर विद्यार्थियों से जुड़ाव रखने के लिए बढ़िया वीडियोज तैयार करने के लिए महाविद्यालय में रिकार्डिंग सुविधाओं युक्त स्टूडियो की आवश्यकता हैं। डॉ.सुरेश कुमार वर्मा ने नई शिक्षा नीति व ई क्लास की चुनौतियों, डॉ.इरशाद अली खान ने गांव व जरूरतमंद तक इन्टरनेट व स्मार्ट फोन की पहुंच नहीं होने के विषय पर विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ.जहांगीर रहमान कुरैशी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे वीडियोज को देखे व घर बैठे अध्ययन को सुचारू रखें। प्राचार्य सी.एस. डोटासरा ने भी विचार व्यक्त किए।

Scanned with CamScanner

दैनिक भास्कर कुचामन भास्कर 27-10-2020

ऑनलाइन टीचिंग व ई-कन्टेंट विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का किया आयोजन

बांगड़ कॉलेज में आयोजित कार्यशाला में वक्ताओं ने ऑन लाइन पढाई में आ रही दिक्कतों पर चर्चा की

भास्कर संवाददाता | डीडवाना

स्थानीय राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल आईक्यूएसी के तत्वावधान में ऑनलाइन टीचिंग व ई-कन्टेंट विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में सह आचार्य डॉ. अतुल गर्ग ने अपने पीपीटी प्रजेंटेशन के माध्यम से बताया कि कोविड-19 की महामारी से शिक्षण कार्य की कक्षा-कक्ष पद्धति जिसमें शिक्षक व विद्यार्थी आमने-सामने रहते हुए अध्ययन-अध्यापन करते थे, बाधित हुई है व इससे विद्यार्थियों को भारी नुकसान हुआ है। डॉ. गर्ग ने बताया कि ऑनलाइन टीचिंग व ई कंटेंट के माध्यम से शिक्षक वर्चुअल क्लास रूम में विद्यार्थी से इन्टरनेट का उपयोग करते हुए जुड़ रहा है तथा यू ट्यूब पर विषयगत टॉपिक्स पर विडियो शेयर कर उन्हें घर बैठे अध्ययन जारी रखने में मददगार है। कोविड-19 की आपदा को स्कूली शिक्षक व उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षक ने अवसर में बदलते हुए इन्टरनेट का उपयोग कर ऑनलाइन टीचिंग से विद्यार्थियों को लाभान्वित कर रहें हैं। डॉ. गर्ग ने इस सन्दर्भ में नए अवसर, चुनौतियों, सुझाव पर चर्चा की।

डीडवाना. बांगड़ कॉलेज मे कार्यशाला के दौरान उपस्थित प्राचार्य व अन्य।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. अरूण व्यास ने बताया कि महाविद्यालय के शिक्षक विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों में ई-कन्टेंट तैयार कर रहे हैं तथा बांगड़ कॉलेज के यू-ट्यूब चैनल पर अभी तक कुल 1169 वीडियोज अपलोड कर चुके हैं जिसमें पाठ्यक्रम अनुसार अपडेटेड जानकारियां विद्यार्थियों को दी जा रही है। डॉ. व्यास ने बताया कि आईक्यूएसी ने महाविद्यालय मे शैक्षणिक गुणवत्ता के उन्नयन हेतु क्वालिटी इनिशिएटिव के तहत कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें सभी संकाय सदस्यों की सहभागिता रही। वाणिज्य संकाय की श्रीमती प्रेम परिहार, सह आचार्य ईएएफएम ने ऑनलाइन टीचिंग व ई कंटेंट की बारीकियों पर चर्चा करते हुए शिक्षकों के वीडियो व्याख्यान ने गुणात्मक सुधार पर प्रशंसा जाहिर की। कला संकाय के चैनाराम महला, डॉ. सुरेश कुमार वर्मा, डॉ. इरशाद अली खान सह आचार्य-राजनीति विज्ञान, डॉ. जहांगीर रहमान कुरैशी आदि ने विचार प्रकट किए। कार्यशाला का तकनीकी संचालन राजेन्द्र आसेरी ने किया।

Scanned with CamScanner

ई-क्लास की चुनौतियों पर चर्चा

ऑनलाइन टीचिंग व ई कन्टेंट विषय पर कार्यशाला आयोजित

[illegible]

राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में इन्टरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल (आई.क्यू.ए.सी.) के तत्वावधान में 'ऑनलाईन टीचिंग व ई-कन्टेंट विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कोविड-19 की गाइड लाइन की पालना करते हुए आयोजित की गई कार्यशाला में डॉ. अतुल गर्ग, सह आचार्य गणित ने अपने पीपीटी प्रजेंन्टेशन के माध्यम से बताया कि कोविड-19 की महामारी से शिक्षण कार्य की कक्षा-कक्ष पद्धति जिसमें शिक्षक व विद्यार्थी आमने-सामने रहते हुए अध्ययन-अध्यापन करते थे बाधित हुई है व इससे विद्यार्थियों को भारी नुकसान हुआ है। डॉ. गर्ग ने कहा कि ऑनलाईन टीचिंग व ई कन्टेंट के माध्यम से शिक्षक वर्चुअल क्लासरूम में जुड़ रहा है तथा यू-ट्यूब पर विषयगत टॉपिक्स पर वीडियो शेयर कर उन्हें घर बैठे अध्ययन जारी रखने में मदद की है। वहीं संयोजक डॉ. अरूण व्यास ने कहा कि महाविद्यालय के शिक्षक विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों में ई-कन्टेंट तैयार कर रहे हैं तथा बांगड़ कॉलेज के यू-ट्यूब चैनल पर अभी तक कुल 1169 वीडियोज अपलोड कर चुके है जिसमें पाठ्यक्रम अनुसार अपडेटेड जानकारियां विद्यार्थियों को दी जा रही हैं।

बांगड़ महाविद्यालय में कार्यशाला को सम्बोधित करते वक्ता। -कृष्णमुरारी [illegible]

डॉ. व्यास ने बताया कि आईक्यूएसी ने महाविद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता के उन्नयन हेतु क्वालिटी इनिशिएटिव के तहत कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें सभी संकाय सदस्यों की सहभागिता रही। कला संकाय के चैनाराम महला, सहायक आचार्य- राजनीति विज्ञान ने बताया कि ई-प्लेटफॉर्म पर विद्यार्थियों से जुड़ाव रखने के लिए बढ़िया विडियोज तैयार करने के लिए महाविद्यालय में रिकार्डिंग सुविधा युक्त स्टूडियों की आवश्यकता है। डॉ. सुरेश कुमार वर्मा ने नई शिक्षा नीति व ई क्लास की चुनौतियों पर चर्चा की। वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. जहांगीर रहमान कुरैशी ने शिक्षकों द्वारा यू-ट्यूब चैनल पर गुणवत्ता युक्त व्याख्यानों के अपलोड करने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए विद्यार्थियों से आहवान किया कि वे इन वीडियो को देखें व घर बैठे अध्ययन को सुचारू रखें।

Scanned with CamScanner

दैनिक भास्कर कुचामन भास्कर 10-08-2020

कॉलेज में कोविड-19 में ई-क्लास प्लेटफॉर्म पर हुआ वर्चुअल क्लास का हुआ आयोजन

बांगड़ कालेज डीडवाना व डूंगर कालेज बीकानेर के भूगर्भ शास्त्र विभागों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन

भास्कर संवाददाता | डीडवाना

राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में भूगर्भ शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरुण व्यास ने बताया कि कोविड के कारण सरकारी गाइडलाइंस के अनुसार विद्यार्थी वर्तमान में शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययन के लिए नहीं आ रहे हैं तब इस परिस्थिति में इनके लिए ई क्लास के माध्यम से बांगड़ कालेज डीडवाना व डूंगर कालेज बीकानेर के भूगर्भ शास्त्र विभागों के संयुक्त तत्वावधान में ई प्लेटफॉर्म पर डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश) के एप्लाइड जियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर प्रदीप कुमार कथल ने राजस्थान के 60 से अधिक भूविज्ञान विषय के पीजी व यूजी स्टूडेंट्स को सूक्ष्म जीवाश्मिकी विषय पर जानकारी प्रदान कर रहे हैं। गत शुक्रवार से शुरू हुई ई क्लासेज में रविवार को भी स्टूडेंट्स ने माइक्रो पैलियंटोलॉजी के विभिन्न आयामों की जानकारी प्राप्त की। इस ई क्लास के आयोजन पर डूंगर कालेज के प्राचार्य डॉ. सतीश कौशिक ने प्रसन्नता व्यक्त की व इससे जुड़ने वाले स्टूडेंट्स को ई क्लास से फायदा लेने का आह्वान किया। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में भूगर्भ शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एस. आर. जाखड़ व बीकानेर डूंगर कालेज में भूगर्भ शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शिशिर शर्मा ने [illegible] प्रोफेसर कथल का राजस्थान के स्टूडेंट्स के लिए ई क्लास के माध्यम से जानकारी प्रदान करने के लिए धन्यवाद अर्पित किया। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, डीडवाना के 60 से अधिक स्टूडेंट्स इस ई क्लास से ऑनलाइन जुड़े व माइक्रो पैलियंटोलॉजी पर जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

ई क्लास के साथ का संचालन बीकानेर से डॉ. देवाराम कर रहे हैं। ई क्लास कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ. जहांगीर रहमान कुरैशी ने बताया कि इस प्रोग्राम के पहले दौर में 13 अगस्त तक प्रोफेसर प्रदीप कथल सूक्ष्म जीवाश्मिकी के विभिन्न आयामों पर ई ट्रेनिंग से स्टूडेंट्स को लाभान्वित करेंगे। बांगड़ कालेज प्राचार्य प्रोफेसर सी. एम. डोटासरा ने विभिन्न शहरों के भिन्न भिन्न भूगर्भ शास्त्र विभागों के एक मंच पर आकर स्टूडेंट्स के हितार्थ आयोजित ई क्लास नवाचार कार्यक्रम के आयोजन पर खुशी जाहिर करते हुए इस आयोजन से जुड़े सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों को बधाई दी।

उल्लेखनीय है कि [illegible] प्रोफेसर प्रदीप कुमार कथल 38 वर्षों से शैक्षणिक कार्यों का अनुभव रखते हैं तथा देश के नामचीन पैलियंटोलॉजिस्ट हैं और पुस्तकों के लेखन के साथ इनके 45 से अधिक रिसर्च पेपर्स राष्ट्रीय व अंतर राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए हैं। ई क्लास के आयोजन समिति के डॉ. अनिल यादव, डॉ. देवेश खंडेलवाल व विजयपाल मीना, जगदीश शर्मा और विजय कुमार स्वामी ने विद्यार्थियों द्वारा ई क्लास के प्रति उत्साह और एकाग्रता दर्शाने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शिविर में स्वयंसेविकाओं ने किया श्रमदान

डीडवाना। राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में प्रथम एक दिवसीय शिविर रविवार को आयोजित हुआ। इस मौके पर स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं ने साफ-सफाई की। साथ ही पेड़ों की टहनियों की कटाई का कार्य भी किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. जहांगीर रहमान कुरैशी ने कहा कि जीवन में सफल होने के लिए विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ सामाजिक कार्यों में भी हिस्सा लेना चाहिए।

वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. अरूण व्यास ने कहा कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता है, इसलिए जो भी कार्य करे उसे पूर्ण मनायोग के साथ करना चाहिए। कार्यक्रम अधिकारी प्रो.चेनाराम महला ने जीवन में अनुशासन रखने की सीख दी। बौद्धिक सत्र में प्रो.भंवरलाल डूडी ने कहा कि एनएसएस जैसी सह शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में निखार आता है। अन्त में डॉ. मगनलाल ढ़ाका ने सभी का आभार जताया।

Scanned with CamScanner

डीडवाना। बांगड़ महाविद्यालय में शुक्रवार को राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में मानवाधिकार दिवस मनाया गया। इस मौके पर वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. अरूण व्यास ने कहा कि कमजोर वर्ग के अधिकारों का संरक्षण की बात कही। साथ ही विद्यार्थियों से अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों का पालन करने का आह्वान किया। इसके अलावा डॉ. इरशाद खान ने मानवाधिकारों की उपयोगिता बताई। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी सी.आर.महला एवं डॉ.अजय शर्मा ने स्वयंसेवकों को अधिकारों के प्रति सजग रहने का आव्हान किया। संचालन प्रो.भंवरलाल डूडी ने किया।

Scanned with CamScanner

दैनिक भास्कर कुचामन भास्कर 30-01-2022

बांगड़ महाविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी।

एनएसएस के तहत एक दिवसीय शिविर का किया गया आयोजन

भास्कर संवाददाता | डीडवाना

बांगड़ कॉलेज में एनएसएस के तृतीय एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया। प्रारम्भिक सत्र में कॉलेज के खेल मैदान में साफ-सफाई कर श्रमदान किया एवं इसी दौरान दौड़ एवं लम्बी कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस दौरान प्रतियोगिता में युवराज व केसर प्रजापत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिविर के दूसरे भाग में बौद्धिक सत्र में प्राचार्य डॉ. जहांगीर रहमान कुरैशी ने स्वयंसेवकों को संबोधित किया। वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. अरूण व्यास ने स्वयंसेवकों को बताया कि सर्वप्रथम लक्ष्य निर्धारित करके अनुशासन, समय प्रबंधन एवं पूर्णमनोयोग से मेहनत करने पर लक्ष्य अवश्य प्राप्त होता है। कार्यक्रम में एक भारत श्रेष्ठ भारत पर संबोधित करते हुए मुख्यवक्ता प्रो.छोटाराम मेघवाल ने राजस्थान के साथी राज्य असम के इतिहास, कला, संस्कृति एवं भूगोल पर प्रकाश डाला।

Scanned with CamScanner

करते हुए 35 दुपहिया वाहन एवं 1 चौपहिया वाहन जब्त किये गये हैं। लॉकडाउन के दौरान अनावश्यक रूप से घरों से बाहर निकलने पर वाहन चालकों के विरूद्ध आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी।

सेवा भारती ने वितरित किए भोजन के पैकेट

डीडवाना। लॉक डाउन के तहत भामाशाह व समाजसेवी के सहयोग से नगरपालिका प्रतिदिन जरूरतमंदों

घर पर बना रहे है मास्क

डीडवाना। राजकीय बांगड़ महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक इस कोरोना महामारी के समय भी अपना योगदान दे रहें है। इन स्वयंसेवकों द्वारा घरों में रहकर मास्क बनाकर निःशुल्क वितरित किए जा रहे है। राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी प्रोफेसर चेनाराम महला, किरण देशवाल व डॉ.मगनलाल ने बताया कि सभी स्वयंसेवक आरोग्य सेतु एप डाउनलोड कर चुके हैं व सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से समाज मे जागृति लाने का प्रयास कर रहें है। इसी कड़ी में स्वयंसेवक दीपक टेलर व ममता जांगिड़ ने मास्क बनाकर निःशुल्क वितरण कर रहे है।

सर्तक, कलक्टर ने पांचों उ

Scanned with CamScanner

National Virtual Conference

On

Geology, Minerals Resources & Hydrogeological Aspects of NW Indian Shield

Organized by:

Department of Geology,
Faculty of Science,
Jai Narain Vyas University, Jodhpur

Certificate of Participation

This is to certify that Mr/ Miss/ Dr. *Arun Vyas,* Associate Professor, Govt. Bangur College, Didwana as actively Participated in the National Virtual Conference on "Geology, Minerals Resources and Hydrogeological Aspects of NW Indian Shield" held on September, 02, 2021 by Department of Geology, Faculty of Science, Jai Narain Vyas University, Jodhpur.

Prof. S. R. Jakhar
Convener

Dr. V. S. Parihar
Coordinator

Scanned with CamScanner

'जल की कमी व जलवायु परिवर्तन बड़ी चुनौती'

- विश्व जल दिवस पर किया वैश्विक चिन्तन

डीडवाना, (निसं)। विश्व के समक्ष 21वीं सदी में स्वच्छ जल की उपलब्धता व जलवायु परिवर्तन बड़ी चुनौती है। वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या के लिए जल संसाधन की मांग एवं आपूर्ति में असंतुलन एक बड़ी चिन्ता का विषय है। ग्लोबल वार्मिंग व जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे मौसम तंत्र में बदलाव खतरनाक है। जलवायु परिवर्तन से भारत में मानसून के मिजाज में भी बदलाव के संकेत मिल रहे हैं, जिससे निपटना आगामी समय में एक नई चुनौती है।

डॉ. अरूण व्यास ने बताया कि इस वर्ष 2020 में विश्व जल दिवस पर 'जल और जलवायु परिवर्तन' की थीम पर वैश्विक चिन्तन किया जा रहा है जो इस बात की ओर संकेत करता है कि जल और जलवायु परिवर्तन कैसे एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। जल हमारा सबसे कीमती संसाधन है व हमें इसका उपयोग और अधिक जिम्मेदारी से करना चाहिए। जलवायु नीति निर्माताओं को अपनी कार्य योजनाओं के केंद्र में जल को रखना चाहिए क्योंकि पानी जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद कर सकता है। डॉ.०अरूण व्यास ने कहा कि विश्व के कुल जल संसाधन का करीब 3 फीसदी ही स्वच्छ जल है तथा विश्व की 20 फीसदी आबादी को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है।

भारत में हो रहे कुल जल प्रदूषण का 70 फीसदी शहरों के मलबे से हो रहा है तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के मापदण्ड अनुसार भारत में उपलब्ध कुल जल संसाधनों का 75 फीसदी मानक स्तर पर खरा नहीं पाया गया है। डॉ. अरूण व्यास के अनुसार राजस्थान में देश का करीब 11 फीसदी भूभाग होने के साथ जल संसाधन का मात्र 1 फीसदी होना तथा रेगिस्तान का क्षेत्र होने के कारण यहां जल के लिए लोगों में विशेष आदर का भाव रहा है। प्रदेश की

डॉ. अरूण व्यास

90 फीसदी पेयजल योजनाएं भूजल आधारित होने व जनसंख्या में प्रतिवर्ष नागौर जिले में भी गत 35 वर्षों में अत्याधिक भूजल दोहन से भूजल स्तर 25 मीटर से अधिक तक गहरा गया है। नागौर जिले में 14 ब्लॉक्स में से 12 अतिदोहित श्रेणी में है। नागौर ब्लॉक सेमी क्रिटिकल श्रेणी में है।

राष्ट्रदूत Sun, 22 March 2020
epaper.rashtradoot.com/c/50209858

Scanned with CamScanner

विश्व मरुस्थलीकरण और सूखा रोकथाम दिवस विशेष

बढ़ते मरूस्थलीकरण व सूखे की समस्या से निपटना बड़ी चुनौती

पर्यावरण प्रदुषण से बदला जलवायु का मिजाज चिंताजनक, बारिश के दिनों की संख्या हुई कम, डॉ.अरूण व्यास से खास बातचीत

बजरंग पारीक
rajasthanpatrika.com

डीडवाना. हर साल 17 जून को विश्व मरुस्थलीकरण और सूखा रोकथाम दिवस मनाया जाता है, इसका उद्देश्य मरुस्थलीकरण और सूखे की उपस्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने, मरुस्थलीकरण को रोकने व सूखे से उबरने के तरीकों के बारे में जानकारी देना है। सरकार व स्वयंसेवी संस्थाएं इस दिवस को मनाती हैं। राजस्थान में ढाई से तीन साल में सूखे की समस्या देखने को मिलती है, इस कारण राजस्थान में इसकी जागरूकता के लिए प्रयास ज्यादा जरूरी है। वनों के विकास के लिए योजनाएं बनाने के बाद धरातल पर कार्य हो तो इस बढते खतरे पर काबू पाया जा सकता है। वन विभाग के द्वारा मरूस्थलीकरण को रोके जाने के लिए कार्य भी किया जाता है। जलवायु में आ रहे बदलाव को भी चिंता का विषय माना जा सकता है, जिसके लिए पर्यावरण प्रदुषण प्रमुख कारण है, पर्यावरण प्रदुषण के चलते ही जलवायु परिवर्तन होता है। जलवायु (मानसुन) में परिवर्तन के बाद बारिश के दिन धीरे-धीरे कम हो रहे है, कम दिनों में ज्यादा बारिश होने के कारण पानी जमीन की गहराई तक नही पहुंच पाता। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि मुसलाधार बारिश के स्थान पर लगातार कई दिनों तक होने वाली रिमझिम बारिश ही फायदेमंद होती है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण व देखभाल अति आवश्यक है, गांव-शहर को हरा-भरा करना सभी का नैतिक कर्तव्य है। बांगड़ राजकीय महाविद्यालय के भूगर्भ शास्त्र विभागाध्यक्ष व सहआचार्य से पत्रिका ने बातचीत की।

पत्रिका : क्या है, जो एक बड़ी चुनौती है?

डॉ. अरूण व्यास : विश्व के सामने बढते मरुस्थलीकरण और सूखे की समस्या से निपटना एक बड़ी चुनौती है। ग्लोबल वार्मिंग व जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम तन्त्र में हो रहा बदलाव खतरनाक है। जलवायु परिवर्तन से भारत में मानसून के मिजाज में भी बदलाव के संकेत मिल रहे है।

पत्रिका : जमीन के अनुपजाऊ हो जाने का क्या कारण है?

डॉ. अरूण व्यास।

डॉ. अरूण व्यास : मरुस्थलीकरण जमीन के खराब होकर अनुपजाऊ हो जाने की ऐसी प्रक्रिया होती है, जिसमें जलवायु परिवर्तन के साथ ही अन्य कारणों से शुष्क, अर्द्ध-शुष्क और निर्जल अर्द्ध-नम इलाकों की जमीन रेगिस्तान में बदल जाती है। जिससे जमीन की उत्पादन क्षमता में कमी होती है। पूरी दुनिया की बात करे तो हर साल 24 अरब टन उपजाऊ भूमि पूरी दुनिया खो देती है।

पत्रिका : भारत की वर्तमान स्थिति क्या है?

डॉ. अरूण व्यास : मरुस्थलीकरणए भूमि क्षरण और सूखा बड़े खतरे हैं। भारत में 29 दशमलव 32 प्रतिशत क्षेत्र मरुस्थलीकरण से प्रभावित है। वर्ष 2005 से वर्ष 2015 के बीच भारत ने 31 प्रतिशत घास के मैदान खो दिये। हालात यह है कि मरुस्थलीकरण भारत की प्रमुख समस्या बनती जा रही है। इसमें से 82 प्रतिशत भाग केवल राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, झारखंड, ओडिशा, मध्यप्रदेश व तेलंगाना में है। दस से अधिक जिले सूखे प्रभावित हैं जिनमे से जैसलमेर सर्वाधिक प्रभवित जिला है।

पत्रिका : इस चुनौती से निपटने के लिए क्या किया जा सकता है?

डॉ. अरूण व्यास : मरुस्थलीकरण के बारे में जागरूकता बढ़ाते हुए पौधरोपण को बढावा देना चाहिए। धरती पर वन सम्पदा के संरक्षण के लिए, वृक्षों को काटने से रोका जा सके इसके लिए सख्त कानून का प्रावधान हो। खाली भूमि पर, पार्कों में, सड़कों के किनारे व खेतों की मेड़ों पर पौधरोपण किया जाये, इसके लिए प्रयास हो। वनीकरण को प्रोत्साहन इस समस्या से निपटने में सहायक हो सकता है, कृषि में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का प्रयोग सूखे को कम करता है।

Scanned with CamScanner

'जलवायु परिवर्तन मानवता के भविष्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती'

डीडवाना,(निसं)। दुनिया भर में पर्यावरण संरक्षण को समर्थन देने के लिए हर साल 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। जलवायु परिवर्तन मानवता के भविष्य और जीवन-समर्थन प्रणालियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, जो दुनिया को रहने योग्य बनाता है। ये बात राजकीय बांगड़ महाविद्यालय डीडवाना में भूगर्भ शास्त्र विषय के सह आचार्य डॉ अरूण व्यास ने पृथ्वी दिवस पर कही।

पृथ्वी दिवस की शुरुआत अमेरिकी सीनेटर गेलोर्ड नेल्सन ने पर्यावरण की शिक्षा के रूप में की थी। सबसे पहले इस दिन को मनाने की शुरुआत सन् 1970 में हुई, जिसके बाद आज इस दिन को करीब 200 देश मनाते हैं। पृथ्वी दिवस 2020 को मनाने के लिए विशेष थीम जलवायु है। राजकीय बांगड़ महाविद्यालय डीडवाना में भूगर्भ शास्त्र विषय के सह आचार्य डॉ अरूण व्यास ने बताया कि पृथ्वी दिवस हमारे ग्रह की सुरक्षा के लिए पर्यावरण जागरूकता को प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया दिन है। 4 अरब 60 करोड़ वर्ष पुराने हमारे ग्रह पर लाखों प्रजातियां हैं। दुर्भाग्य से मानव ने प्रकृति

सह आचार्य डॉ. अरूण व्यास

■ पृथ्वी दिवस 2020 को मनाने के लिए विशेष थीम जलवायु है

के संतुलन को पूरी तरह से खराब कर दिया है और इसके परिणामस्वरूप दुनिया में प्रजातियों के विलुप्त होने की सबसे बड़ी दर का सामना करना पड़ रहा है। हमने 6 करोड़ साल पहले डायनासोर को खो दिया था। आज हमारी दुनिया में प्रजातियों का तेजी से विलुप्त होना मानव गतिविधि का परिणाम है। डॉ.अरूण व्यास के अनुसार अभूतपूर्व वैश्विक विनाश और पौधों और वन्यजीवों की आबादी में तेजी से कमी सीधे मानव गतिविधि से प्रेरित कारणों से जुड़ी हुई है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, पर्यावरण प्रदूषण और कीटनाशकों के बढ़ते प्रभाव बहुत दूर तक पहुंच रहे है। हमें लुप्तप्राय और खतरे वाली प्रजातियों की रक्षा के लिए मिलकर काम करना चाहिए। दुनिया प्रजातियों के बड़े पैमाने पर विलुप्त होने का सामना कर रही है। स्तनधारियों, पक्षियों, सरीसृपों, उभयचरों, मछली, क्रस्टेशियन, कोरल और अन्य नस्लों के सभी प्रजातियों और पौधों की सभी प्रजातियों में गिरावट आई है। अधिकांश जीवित चीजों पर मानव सभ्यता का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। डॉ. व्यास ने बताया कि पृथ्वी पर जल, जंगल, जमीन, जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन जीवन प्रणाली को प्रभावित कर रहें है और मानव गतिविधियों से हो रहे पर्यावरण प्रदूषण ने पृथ्वी दिवस को मनाये जाने की उपयोगिता को बढा दिया है। हमें सावचेत रहकर हमारी जीवन शैली में बदलाव करना होगा वरना मानव गतिविधियों के कारण पृथ्वी पर छठे महाविनाश को रोकना कठिन होगा। डॉ. अरूण व्यास ने कोरोना पर चिंता जाहिर करते हुए आमजन से अपील की कि हमें इस वक्त सरकार की एडवाइजरी की पालना करते हुए लॉकडाउन में अपने घरों में रहकर अपने जीवन को सुरक्षित रखने के लिए संयम रखना होगा और हमारी जीवन शैली में बदलाव लाना होगा।

राष्ट्रदूत Thu, 23 April 2020
epaper.rashtradoot.com/c/51210931

Scanned with CamScanner

देश की आर्थिक प्रगति में खनिज संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका

भू-वैज्ञानिक दिवस पर विशेष

न्यूज सर्विस/नवज्योति, डीडवाना

अप्रैल माह के पहले रविवार को भू-वैज्ञानिक दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर राजकीय बांगड़ महाविद्यालय में भूगर्भ शास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. अरूण व्यास ने कहा कि किसी भी देश व प्रदेश की आर्थिक प्रगति में खनिज संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनकी खोज में भूवैज्ञानिक फील्ड वर्क के दौरान अपनी स्किल्स का प्रदर्शन करते हुए खनिज निक्षेपों की डिस्कवरी करते हैं।

उन्होंने बताया कि पूरी दुनिया में जियोलोजिस्ट अपनी प्रोफेशनल दक्षता के कारण विज्ञान जगत में विशेष पहचान बनाए हुए हैं। पृथ्वी का निर्माण, भूकंप, ज्वालामुखी जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापवृद्धि और विकास के दौर के क्रमबद्ध चरणों में हुई घटनाओं के साथ विभिन्न इंजीनियरिंग व माईनिंग प्रोजेक्ट्स से जुडे विभिन्न पहलुओं पर भूवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन व शोध से कई अनसुलझे पहलूओं को सुलझाने में अहम रोल अदा किया है।

राजस्थान के परिपेक्ष्य में उन्होंने बताया कि राज्य में कुल 81 विभिन्न खनिजों के निक्षेप है, जिनमें से 57 खनिजों का खनन कार्य हो रहा है। सीसा, जस्ता, सीलेनाइटव वोलेस्टोनाइट खनिजों का उत्पादन केवल राजस्थान में ही होता है। वही चांदी, कैल्साइटव जिप्सम में भी हमारा राज्य अव्वल है। उन्होंने बताया कि राजस्थान में 176 माइनिंग लीज मेजर खनिजों के लिए व 1498 माइनर खनिजों के लिए तथा 17481 क्वेरी लाइसेंस स्वीकृत है। राज्य के खान एवं भूविज्ञान विभाग ने 2020-21 के दौरान दिसंबर 2020 तक 3125 करोड रुपये का राजस्व प्राप्त किया। भूवैज्ञानिक खोज माइनिंग इंडस्ट्री के लिए वरदान साबित होती है और जियोलॉजिकल मैपिंग व सर्वेक्षण में भूवैज्ञानिक अपनी क्षमताओं का उपयोग कर राष्ट्र की प्रगति में अपना अहम रोल अदा करते हैं। उन्होंने बताया कि बांगड़ कॉलेज में भूगर्भ शास्त्र में स्नातकोत्तर अध्ययन 1981 से कराया जा रहा है। यहां के एलुमनी भूवैज्ञानिक के तौर पर देश के अनेकों संस्थाओं में अपनी हिस्सेदारी निर्वाह कर रहे हैं।

Scanned with CamScanner

भूवैज्ञानिकों का खनिज संसाधनों की खोज में महत्वपूर्ण योगदान : डॉ. अरूण व्यास

डीडवाना, (निसं)। अप्रेल माह के पहले रविवार को भूवैज्ञानिक दिवस मनाया जाता है और इस अवसर पर राजकीय बांगड़ महाविद्यालय डीडवाना में भूगर्भ शास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. अरूण व्यास ने बताया कि किसी भी देश व प्रदेश की आर्थिक प्रगति में खनिज संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इन संसाधनों की खोज में भूवैज्ञानिक फील्ड वर्क के दौरान अपनी स्किल्स का प्रदर्शन करते हुए खनिज निक्षेपों की डिस्कवरी करते हैं।

डॉ. व्यास ने बताया कि पूरी दुनिया में जियोलोजिस्ट अपनी प्रोफेशनल दक्षता के कारण विज्ञान जगत में अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। पृथ्वी के निर्माण, भूकंप, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक ताप वृद्धि और विकास के दौर के क्रमबद्ध चरणों में हुई घटनाओं के साथ विभिन्न इंजीनियरिंग व माईनिंग प्रोजेक्ट्स से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भूवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन व शोध से अनेकों अनसुलझे पहलूओं को सुलझाने में अहम रोल अदा किया है। राजस्थान के परिपेक्ष्य में बात करते हुए उन्होंने बताया कि राज्य में कुल 81 विभिन्न खनिजों के निक्षेप है, जिनमें से 57 खनिजों का खनन कार्य हो रहा है। सीसा, जस्ता, सीलेनाइटव वोलेस्टोनाइट खनिजों का उत्पादन केवल राजस्थान में ही होता है, वही चांदी, कैल्साइटव जिप्सम में भी हमारा राज्य अव्वल है।

भवन निर्माण में उपयोगी सैंडस्टोन, मार्बल और ग्रेनाइट के भंडार भी यहां प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इसके अलावा सीमेंट ग्रेड व स्टील ग्रेड लाइमस्टोन के लिए भी राजस्थान प्रसिद्ध है। डॉ अरूण

■ भूवैज्ञानिक दिवस पर दी जानकारी

व्यास ने बताया कि राजस्थान में 176 माइनिंग लीज मेजर खनिजों के लिए व 1498 माइनर खनिजों के लिए तथा 17481 क्वेरी लाइसेंस स्वीकृत हैं। राज्य के खान एवं भूविज्ञान विभाग ने 2020-21 के दौरान दिसंबर 2020 तक 3125 करोड रुपये का राजस्व प्राप्त किया। बॉम्बे हाई के बाद राजस्थान क्रूड ऑयल के उत्पादन में देश का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है व सात मिलियन मैट्रिक टन प्रति वर्ष उत्पादन कर रहा है। भूवैज्ञानिक खोज माइनिंग इंडस्ट्री के लिए वरदान साबित होती है और जियोलॉजिकल मैपिंग व सर्वेक्षण में भूवैज्ञानिक अपनी क्षमताओं का उपयोग कर राष्ट्र की प्रगति में अपना अहम रोल अदा करते हैं।

डॉ. व्यास ने बताया कि बॉगड कालेज डीडवाना में भूगर्भ शास्त्र विभाग में स्नातकोत्तर अध्ययन 1981 से कराया जा रहा है और इस विभाग के एलुमनी भूवैज्ञानिक के तौर पर देश के अनेकों संस्थाओं में अपनी हिस्सेदारी निर्वाह कर रहे हैं। क्यों मनाया जाता है भूवैज्ञानिक दिवस भूवैज्ञानिकों, भूभौतिकीविदों और भू-वैज्ञानिकों का एक पेशेवर अवकाश है। यह पारंपरिक रूप से अप्रैल के पहले रविवार को मनाया जाता है। इस छुट्टी की स्थापना शिक्षाविद् अलेक्जेंडर यांशिन की अध्यक्षता वाले प्रमुख सोवियत भूवैज्ञानिकों के एक समूह ने शुरू की थी। उनकी पहल के बाद, भूवैज्ञानिक दिवस की स्थापना 31 मार्च, 1966 को सुप्रीम साइबिड के प्रेसीडियम के फरमान द्वारा की गई थी।

Scanned with CamScanner